ISSN: 0973-0583

पुस्तक समीक्षा
पाखंड के विविध रूपों पर चोट करता 'मठाधीश'

समीक्षकः डॉ0 शिव कुमार

प्राचार्य, रामदेइ रामचन्द्र मेमोरियल शिक्षण संस्थान, नदवाँ, पटना

करीब तीन दशकों से हिन्दी साहित्य में सक्रिय रूप से सशक्त लेखन करने वाले समकालीन मशहूर व्यंग्य कथाकार, कवि, नाटककार, उपन्यासकार और दार्शनिक श्रीकान्त व्यास का साहित्य जगत में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। साहित्य की गद्य व पद्य विधाओं में तीन दर्जन से अधिक मौलिक ग्रंथों की रचना करने वाले श्रीकान्त व्यास अपनी व्यंग्य शैली के लिए विख्यात हैं। इनकी दृष्टि बहुत पैनी है, भाषा की सहजता है और कहने का अंदाज अनोखा है। इनकी भाषा शैली चुम्बक सा आकर्षित करती है। अगर श्रीकान्त व्यास को कलम का जादूगर और प्रयोगधर्मी साहित्यकार कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए। सामयिक समस्यामूलक एवं विचारोत्तेजक कहानियाँ कविताएँ, नाटक, उपन्यास व व्यंग्य लेख लिखना इनकी साहित्यिक प्रवृत्ति है। इनकी कथाओं नाटकों और काव्यों में यथार्थ का चित्रण साहित्यिक कल्पनाओं के साथ किया गया है जो पाठक को आदर्श की ओर उन्मुख करता है।

श्रीकान्त व्यास के हिन्दी व्यंग्य कहानी-संग्रह 'मठाधीश' सन् 2011 में व्यास प्रकाशन, पटना (बिहार) ने प्रकाशित किया है। कहानीकार ने पुस्तक में 'अपनी ओर से' में लिखा है-"कहानी-संग्रह 'मठाधीश' एक प्रयोग है। पाठकों को इसमें पाखंडियों के खेल, सामंतों का तांडव, जनतांत्रिक व्यवस्था के नाम पर खिलवाड़, कलियुगी पुत्र के कारनामे, निर्लोभी गधे का स्वर्ग त्याग, एक सनकी कॉमरेड की मौत, कुत्ते की लाश पर घृणित खेल आदि का विहंगम दृश्य देखने-पढ़ने को मिलेगा।" लेखक ने इसमें और महत्त्वपूर्ण बातें लिखी है, उन्हीं के शब्दों में-"कहानियों के माध्यम से मैंने अद्यतन मानव-प्रवृत्ति का मूल्यांकन एवं मनोविश्लेषण पर जोर दिया है। इस पुस्तक में वस्तुतः सामयिक, समस्यामूलक एवं विचारोत्तेजक कहानियों के माध्यम से यथार्थवादी अभिव्यक्ति प्रदान करने की कोशिश की गई है।" हिन्दी व्यंग्य कथा-संग्रह 'मठाधीश' में श्रीकान्त व्यास की कुल दस व्यंग्य कहानियाँ शामिल हैं। सभी कहानियाँ व्यंग्यात्मक अंदाज में लिखी गई हैं। इसमें कथाकार का दृष्टिफलक व्यापक है। सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विसंगतियों को कथाकार श्रीकान्त व्यास ने अपनी कहानियों का विषय बनाया है। कहानियों में जीवन्त दृश्य उपस्थित हुआ है।

पुस्तक के प्राक्कथन में भगवती प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है-"बहुआयामी युवा रचनाकार श्रीकान्त व्यास यों तो नाटक, कविता, व्यंग्य लेख,कहानियाँ, निबन्ध, अध्यात्म आदि में महत्त्वपूर्ण दखल रखते हैं और हिन्दी तथा अंगिका में समान अधिकार के साथ लेखन करते हैं, पर इनकी मूल विधा है व्यंग्य। यही वजह है कि हर विधा के आपके लेखन पर आपका व्यंग्यकार हावी रहा और नाटकों में आपके व्यंग्य नाटक और कविताओं में व्यंग्य कविताएँ खास तौर से चर्चित रही हैं। देश की पत्र-पत्रिकाओं में आपकी वैविध्यपूर्ण रचनाओं और एकल संग्रहों की चर्चाएँ होती रही हैं। प्रस्तुत कृति भी वैसे तो कहानियों का संग्रह है, मगर मूलतः ये सारी-की-सारी व्यंग्य-कथाएँ हैं, जो छोटी-बड़ी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर लोकप्रियता हासिल कर चुकी हैं।" इसी प्राक्कथन में द्विवेदी जी आगे लिखते हैं-"शीर्षक कहानी 'मठाधीश' में तथाकथित धर्मगुरुओं की चारित्रिक पतनशीलता की जमकर पोल खोली गई है। पंडित पाँचूलाल का इकलौता लाडला चतुरानंद, जो अपनी नालायकी, शराबखोरी और तमाम दुर्व्यसनों की वजह से आजिज आकर घर से निकाल बाहर किया गया था, न सिर्फ एक मठ के स्वामी का, तिकड़मों से विश्वास जीतकर उनकी हत्या का षड्यंत्र करता है, बल्कि उस मठ का स्वयं स्वामी बन, स्वामी चतुरानंद जी महाराज के रूप में रातों-रात प्रसिद्धि भी हासिल कर लेता है।

संग्रह की शीर्षक कहानी 'मठाधीश' धार्मिक पाखंड की कलई खोलता है। पंडित पाँचूलाल का नालायक बेटा कैसे विश्वासघात के सहारे एक मठ का स्वामी बन जाता है! तिकड़म के सहारे प्रसिद्धि प्राप्त करता है, श्रद्धालुओं की आस्था व विश्वास का व्यापार करता है। समाज में ऐसे श्री चतुरानंद जी महाराज एक नहीं, बल्कि अनेक हैं, जिनके लेखक ने पाठकों को रू-ब-रू कराया है। पाठक देख सकते हैं कि समाज के लोग धर्म के अंधे कुएँ की ओर जा रहे हैं। कथा के माध्यम से लेखक ने पाठकों को समाज के ऐसे लोगों से सचेत रहने की सलाह दी है। आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी कहानी 'मुर्गे की बाँग' में धार्मिक उन्माद का कुशल चित्रण

है। कहानी संग्रह की एक बानगी देखिये-"एक सप्ताह पूर्व जन्नतगंज में एक विशाल जलसे का आयोजन हुआ। इस जलसे का अहम किरदार था-मुम्बई से पधारे एक नामी मुल्ला। जलसे में उसकी तकरीर दहकते अंगार थे। तकरीर के वक्त मुल्ला के चेहरे पर शैतानी साफ दिख रही थी। जो पहले मुसलमान थे, अब कट्टर मुसलमान हो गये और जो पहले हिन्दू थे, अब कट्टर हिन्दू हो गये। मुर्गा और मुर्गी को लेकर दोनों पक्षों का झगड़ना हवा में तीर मारने के समान है।. मुर्गा का स्वभाव है बाँग देना, तो वह देगा ही। मुर्गी का स्वभाव है मुर्गा की चोंच से चोंच लड़ाना, तो वह लड़ायेगी ही। मुर्गा एवं मुर्गी जाति, धर्म, सम्प्रदाय से परे होते हैं।''

व्यंग्य कहानी 'लंगड़ा जनतंत्र' का मुख्य पात्र मनोहरलाल है लेकिन वह हमेशा उदास रहता है, उनके मित्र उन्हें मनहूसलाल कहते हैं। उनका लंगोटिया यार चरणदास जिन्दादिल है। उन दोनों के कथोपकथन के द्वारा कहानीकार ने लोकतंत्र के आधारभूत सिद्धान्त से पाठकों को परिचित कराया है।

मानवेतर प्राणी पर लिखी गई श्रीकान्त व्यास की एक अद्‌भुत कहानी है-'बगुला महाराज।' कहानीकार ने यहाँ जंगल के जीव-जन्तुओं की मार्फत सामाजिक यथार्थ का चित्रण कुशलता से किया है। इस कथा में तोता मौलिक लेखक है जबकि बगुला भगत प्रकाशक है। तोता एवं बगुला भगत के बीच वार्तालाप होती है। भावुक विपन्न तोता पांडुलिपि के साथ प्रकाशक बगुला भगत के सामने उनकी सदाशयता का आकांक्षी है। कुटिल प्रकाशक बगुला भगत अपने लाभ की बात करता है। इस कहानी में प्रकाशन जगत में बौद्धिक सम्पदा के शोषण का सूक्ष्म विवचेन किया गया है। 'मुखियाजी का साँढ़' कहानी सामन्ती तांडव का नमूना है। एक सामंत के द्वारा गरीबों पर ढाये गये जुल्म की दास्तान है यह कहानी। मुखियाजी की तरह उनका साँढ़ भी कम शैतान नहीं था। साँढ़ की हरकत से इलाके के लोग परेशान रहते। 'मुखियाजी का साँढ़' बेसहारे पर सामंती अत्याचार का एक सफल चित्रण है।

'यमलोक से वापसी' कहानी में कहानीकार ने दिखाया है कि श्रमशील गदहा लोभ रहित स्वर्ग का परित्याग करता है। आज के इस भौतिकवादी युग में जहाँ लोग मामूली-सा लोभ के लिए कुछ भी अनैतिक कार्य करने से चुकते नहीं, वहीं एक गधे का निर्लोभी होना हमें सोचने को मजबूर करता है। हमें मानव होने को धिक्कारता है। सवाल है कि जब एक पशु निर्लोभी और ईमानदार हो सकता है तब भला हम मानव निर्लोभी और ईमानदार क्यों नहीं हो सकते? कहानी 'कॉमरेड की मौत' की भी विषय-वस्तु कमाल की है। कहानीकार ने इस कहानी में एक सनकी वामपंथी नेता के दु:खद अन्त की चर्चा की हे। वामपंथियों का विचार हवा में आलू की खेती करने जैसा है। सरजमीं की हकीकत को नजरअंदाज कर कोई फलसफा जेहन में ही कुलबुलाता रहेगा। पानी के बुलबुले की तरह तत्काल फट जायेगा। 'शिकार' कहानी में कुटिल पंडित की धोखाधड़ी को दिखाया गया है कि कैसे जाहिल जलालत की जिन्दगी जी रहे लोगों को शिकार बनाने की जुगत में रहता है पंडित बुलाकी धूर्त, पाखंडी और चालाक लोग भोले-भाले आमजन को अंधविश्वास के मकड़जाल में फँसाकर अपना उल्लू सीधा करने में कामयाब हो जाता है। यह कहानी हमें अंधविश्वास के मकड़जाल से मुक्त होने का संदेश देती है।

'पिता का पलायन' कथा में कलियुगी पुत्र के कारनामों का चित्रण है। कहानी का कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत है-"कवि बाप के इस कविकाठी पुत्र ने जो करामात कर दिखाई उसका दूसरा उदाहरण शायद ही कहीं मिले। इस धर्मचंद की अधर्मी लीलाकांड की चर्चा हैजे की बीमारी की तरह यत्र-तत्र सर्वत्र फैल गई। धर्मचंद ने अपने पिता जी की चुराई गई कविताएँ आकाशवाणी से प्रसारित क्या करा ली कि उनकी छाती कोबरा साँप के फन की तरह तन गई। 'सूदखोर का कुत्ता' व्यंग्य कथा में सूदखोरों की कारगुजारियों का कच्चा चिट्‌ठा है। समाज में सूदखोरी का कार्य अच्छा नहीं माना गया है। सूदखोरों को लोग घृणा की नजर से देखते हैं। सचमुच सूदखोर घृणा के पात्र है ही।

कहानी-संग्रह 'मठाधीश' व्यंग्य की तीक्ष्ण धार से लवरेज है। सभी व्यंग्य कहानियों में व्यंग्य की अद्‌भुत छटा देखने को मिलती है। श्रीकान्त व्यास की पुस्तक 'मठाधीश' के विहंगम अवलोकन के पश्चात कहा जा सकता है कि सटीक मुहावरों, व्यंग्य परक शैली के कारण कहानियाँ अतिरोचक हो गई हैं। कहानी संग्रह में पाखंड पर बोबाकी से प्रहार हुआ है।

श्रीकान्त व्यास का सामाजिक सरोकार व्यापक है। सैकड़ों लोगों से इनका नित मिलना-जुलना होता है। इनके पास अनुभव का पिटारा है। ये बंद कमरे में बैठकर लिखनेवाले साहित्यकार नहीं। इन्हें साहित्य सृजन के लिए उपयुक्त वातावरण चाहिए। साहित्य सृजन के अलावा अनेक नाटकों और कई फिल्मों में भी अभिनय किया है। इस उच्च कोटि की रचना के लिए श्रीकान्त व्यास को ढेर सारी बधाई। रोचक अंदाज में लिखी गई तमाम व्यंग्य कहानियाँ पाठकों को आकर्षित करती हैं।

पुस्तक : मठाधीश (हिन्दी व्यंग्य कहानी-संग्रह)

लेखक: श्रीकान्त व्यास

प्रकाशक: व्यास प्रकाशन, नीलाचल निवास, दक्षिणी मंदिरी, पटना-800001(बिहार) वर्ष-2011

❖❖❖